①

DEVENDRA SIR (G.D. MISHRA INSTITUTE OF HIGHER STUDIES LALGANJ BIHAR)

EPC - 1 READING AND REFLECTION ON TEXTS

B.Ed - 2019-21 DATE - 03.05.2020

बौद्ध साहित्य की थेरी गाथा

Ans. महात्मा बुद्ध के द्वारा स्त्रियों का संघ में प्रवेश की अनुमति एक युगांतर घटना है। बुद्धत्व प्राप्त स्त्रियाँ थेरी कहलाती थी जिन्होंने अपनी कविता में अपनी गाथाएँ लिखी. थेरी गाथाएँ तत्कालिन समाज की स्त्री की स्थिति को समझने के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है।

महात्मा बुद्ध ने संघ में जातिवाद या लिंग भेद का कोई स्थान नहीं दिया अर्थात सभी जाति के सभीलोग सम्मान थे। महात्मा बुद्ध ने चुल्लवग्ग में स्पष्ट किया है कि भिक्षुओं जिस प्रकार महानदियाँ, महासमुद्र में मिलकर अपने नाम गोत्र को छोड़ देते हैं और महासमुद्र के ही नाम से ही प्रसिद्ध होती है ऐसे ही भिक्षुओं विभिन्न जाति वर्णों के लोग तथागत द्वारा बतलाये गये धर्म विनय में प्रव्रजित होकर बुद्ध के नाम गोत्र को छोड़ देते हैं अर्थात दीक्षा लेकर यह भूल जाते है कि हमारा अमुक वर्ण था अमुक पंथ था।

तत्कालिन भारतीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति काफी दयनीय थी उन्हें सम्मान प्राप्त नहीं था। उसको देखते हुए भिक्षुणी संघ की स्थापना एक बड़ा क्रांतिकारी और साहसिक निर्णय था। भिक्षुणी संघ की स्थापना करने में आनंद का विशेष योगदान रहा। उन्होंने ही भगवान बुद्ध से महिलाओं को संघ में दीक्षित करने की प्रार्थना की और तर्क सहित प्रेरित भी किया था।

आनंद भगवान बुद्ध के चचेरे भाई थे। उनकी माता का नाम विदेह कुमारी तथा पिता का नाम अमितोदन था जो शुद्धोदन भगवान बुद्ध के पिता से छोटे थे।

classmate
Date
Page

बुद्धत्व प्राप्ति के दूसरे साल भिक्षु आनंद की प्रव्रज्या हुई थी। आनंद पच्चीस वर्ष तक छाया की तरह भगवान बुद्ध की सेवा करते रहे। आनन्द को चौरासी हजार धर्मस्कंध याद थे। पहली बौद्ध संगति में धम्म का ज्ञाता होने के कारण "धम्मधर" की उपाधि से विभूषित किया जाता था। इन्होंने इस संगीति के रूप में भाग लेकर धम्म का संगायन किया।

भिक्षुणी संघ की स्थापना का विवरण - चुल्लवग्ग में मिलता है। जो ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण है। उस समय भगवान बुद्ध शाक्यों के देश में कपिलवस्तु के न्यग्रोधाराम में विहार कर रहे थे। तब महाप्रजापती गौतमी ने भगवान के सम्मुख जाकर निवेदन पूर्वक याचना की भन्ते अच्छा हो स्त्रियाँ भी तथागत में दिखाये धर्म-विनय में प्रव्रज्या पायें।

गौतमी ने तीन बार प्रार्थना कि भगवान बुद्ध ने तीनों प्रार्थना अस्वीकार कर दी और वहाँ से वैशाली चलेगये। वैशाली जाकर महावन की कुटागार शाला में विहार करने लगे। कुछ समय के पश्चात महाप्रजापति गौतमी अपना सिर मुड़वाकर पाँच सौ शाक्य स्त्रियों को साथ लेकर भगवान बुद्ध के पास वैशाली आ गयी। यात्रा करते करते उनके पैर फूलगये, शरीर धूल से भर गये काफी दुःख और उदास लग रही थी। जब वहाँ स्थविर आनंद ने उनकी उदासी का कारण पूछा तो महाप्रजापति गौतमी ने बताया कि स्त्रियों को बौद्ध संघ में प्रव्रज्या की अनुमति के लिए तीन बार याचना की परंतु भगवान तीनों बार अस्वीकार कर दिये। तब आनंद ने दूसरी प्रकार से भगवान से अनुज्ञा मांगते हुए कहा कि - भन्ते - क्या तथागत के प्रवेदित धर्म घर से बेघर प्रव्रजित हो स्त्रियाँ स्रोतापत्तिफल सकृदागामिफल अनागामि फल तथा अर्हत्व का साक्षात कर सकती है। भगवान बुद्ध ने कहा साक्षात कर सकती है आनंद

तब आनंद ने पुनः कहा भन्ते यदि तथागत प्रवेदित धर्म विनय में प्रव्रजित होकर स्त्रियाँ साक्षात कर सकने योग्य है तो भन्ते जो अभिभाविका है पोषिका है यह भगवान की मौसी गौतमी बहुत उपकार करने वाली है —

उन्होंने माँ की मृत्यु के बाद भगवान का पालन पोषण किया है भन्ते अच्छा हो यदि महिलाएँ को प्रव्रज्या की आज्ञा मिले और तब भगवान बुद्ध ने उत्तरदायित्व पूर्ण नियमों के साथ महाप्रजापति गौतमी व अन्य पाँच सौ अन्य महिलाओं को प्रव्रज्या की अनुमति दे दी।

=oz